# सन्त-वाणी

# सन्त-वाणी

## ( सन्त सगरामदासजी की साखी )

प्रकाशक
**कानसिंह पालावत**
ए-4 'करणी-कृपा'
शास्त्रीनगर, जयपुर - 302016,
फोन - 300264

प्रकाशक
**ठा. कान सिंह पालावत**
ए–4 'करणी–कृपा'
शास्त्रीनगर, जयपुर 302 016
फोन – 300264

**प्रथम संस्करण – 2001**

**मूल्य – प्रेम प्रसाद**

कम्प्यूटर टाइप सैटिंग एवं प्रिन्टिंग
**सीमा प्रिन्टो फास्ट**
416, सूर्या चेम्बर, नेहरू बाजार,
जयपुर, फोन : 310975

# ॐ श्री करणी

## दो शब्द

**शबदां मार्‌या मर गया, शबदां तजिया राज़।**
**जिन जिन शबद विवेकिया, वां रा सरिया काज़॥**

शब्द ब्रह्म है, मनीषियों ने बताया है कि विवेक से शब्द ग्रहण करने से ही प्रगति होती है। श्रीरामकृष्ण परमहंस ने कहा है "अपने मारने को तो नेहरणी (नाखून काटने की) ही बहुत है, तोप तलवार तो दूसरों को मारने को चाहिए।" इस मार्ग में तो आपे को ही मारना है वह केवल "मोरे हृदय लागा शबद बाण" से ही संभव होना है।

संतों ने महापुरुषों ने अपने–अपने ढंग से स्वानुभव की अभिव्यक्ति की है, अपौरुषेय वेदों से लेकर गीता रामायण, गुरुवाणी, साखियों आदि में यही सब कुछ तो है, पर सामान्यतया इनको अध्ययन करने का न तो समय है और ना ही समझ और इसीलिए सरलभाषा में उसी ज्ञान को व्यक्त करने की महत्ता है।

आदरणीय संत सगरामदासजी महाराज ने अपनी सरल राजस्थानी भाषा में इन कुण्डलियों के माध्यम से अनुभव की गागर में सागर उड़ेला है। इनकी प्रामाणिकता इसी से समझी जा सकती है कि आज के युग के परमसंत श्रीरामसुखदासजी महाराज यदाकदा अपने प्रवचनों में इनका उद्धरण करते ही रहते हैं।

श्री कानसिंहजी पालावत का इस अमूल्य ज्ञान-निधि का पुन: मुद्रण एवं निशुल्क वितरण का कार्य सराहनीय है, इससे यह लुप्तप्राय: काव्य जनजीवन में पुन: ज्ञानधारा का संचरण कर सकेगा। इनका यह प्रयास मेरे पूज्य पिताश्री द्वारा इन्हें दिया गया. ''कान-सुजान'' नाम सार्थक करता है।

निवेदक<br>
डॉ. करणी सिंह रत्नू



# गुरु-महिमा

**नमो राम गुरुदेवजी नमो नमो सब सन्त<br>
सगरामदास बंदन करे निसदिन बार अनंत**

## कुण्डलियाँ

कहे दास सगराम गुरां री महिमा भारी<br>
कीं कर बरणी जाय जीभ धूजे है म्हारी<br>
धूजे म्हारी जीभड़ी सुण सुण जस रा थाट<br>
तोलो[1] किणरो दूं हमें ओ सरगुण रो घाट<br>
ओ सरगुण रो घाट धणी निरगुण औतारी<br>
कहे दास सगराम गुरां री महिमा भारी

( २ )

कहे दास सगराम बड़े घर लागी ताली[2]<br>
रामभजन सूं प्रीत कटी पापाँ री जाली<br>
पापां री जाली कटी सतपुरुषाँ रे संग<br>
हिरदो बिगसे कवळ ज्यों आठूँ पहर उमंग<br>
आठूँ पहर उमंग निवाई सतगुरु डाली<br>
कहे दास सगराम बड़े घर लागी ताली

---

१. तोलो = तुलना, २. ताली = सुरता

( ३ )

रामचरण महाराज री बाणी रा बाखाण
सीतापति रे हाथ रा सगरामदास कहे ब्राण
सगरामदास कहे बाण अनेक असुर संहारे
यां शबदां रे पाण अनेकों अधम उधारे
कहां लग महिमा बरणिये कहत नको परमाण
रामचरण महाराज री बाणी रा बाखाण

( ४ )

रामचरण महाराज रो कठिन त्याग बैराग
देवी सिंह जगावणों उड़े पलीतां आग
उड़े पलीतां आग धार खांडा की बहणो
काजल का घर मांहि उजळा कपड़ा रहणो
सगरामदास जन राम का लागण दे नहिं दाग
रामचरण महाराज रा कठिन त्याग बैराग

( ५ )

रामचरण महाराज की मैं बलि बारम्बार
धरती मरती राखदी सगरामदास कहे भार
सगरामदास कहे भार दया रा सागर दाता
घणाँ मिनख महाराज राखिया दोजख[१] जाता
महिमा मेरे श्याम री कही न जावे पार
रामचरण महाराज की मैं बलि बारम्बार

---

१. दोजख = नरक



# चेतावनी

( ६ )

कहे दास सगराम मनै यो इचरज आवै
मिनख कियो महाराज भलै तू कांई चावै
कांई चावै है भले यूं तो मने बताय
राम नाम कह रात दिन जनम सफल हो जाय
जनम सफल हो जाय बास अमरापुर पावै
कहे दास सगराम मनै यो इचरज आवै

( ७ )

जनम जनम में करज कियो है माथे करड़ो
मिनख कियो महाराज काटदे क्यूं नहीं खरड़ो
यो खरड़ो[१] करड़ो घणो कींकर बणो बणाव
निसबासर[२] सगराम कहै रामधणी ने ध्याव
रामधणी ने ध्याव बाळदे खांवन्द[३] खरड़ो
जनम जनम में करज कियो है माथे करड़ो

( ८ )

मिनखा तन दीनों थने भोंदू भज रे पीव
बैठ्यो क्यूं सगराम कहे, ऊंडी देने नींव
ऊंडी देने नींव हियो फूटोड़ा गेला
कर आगां ने ठोड़ अठे कुण रेवण देला
लख चोरासी जूण में रुळियो फिरसी जीव
मिनखा तन दीनों थने, भोंदू भज रे पीव

---

१. खरड़ो = उधार का खत, २. निसबासर = रात-दिन, ३. खावन्द = परमात्मा (मालिक)

( ९ )

कहे दास सगराम ऊंट मती कर अरड़ाटा
बिना गुन्हा[१] ही डंड लाटतो करड़ा लाटा[२]
करड़ा लाटा लाटतो कयो मानतो नांहि
घणा घणा दुख पावसी जनम जनम के मांहि
जनम-जनम के मांहि करम कीन्हा थैं माठा[३]
कहे दास सगराम ऊंट मती कर अरड़ाटा

( १० )

कहे दास सगराम भजन करता हो दोरा
लख चौरासी जूंण भुगततां हो जो सोरा
सोरा हो जो भुगततां घणी सहोला मार
गधा होवेला ओड रा माथे लदसी भार
माथे लदसी भार रेत रा भर भर बोरा
कहे दास सगराम भजन करता हो दोरा

( ११ )

कहे दास सगराम राम नै भूलै क्यूं कर
भूल्यां भूंडी[४] बणै माजनो जावै बीखर
बीखर जावै माजनो देय गधा री जूंण
मोरां[५] पड़सी टांकियां ऊपर लदसी लूंण
ऊपर लदसी लूंण चढ़ावै सामो सीक्खर[६]
कहे दास सगराम राम ने भूलै क्यूं कर

१. गुन्हा = अपराध, २. लाटा = खळा (खलियान), ३. माठा = मन्द,
४. भूंडी = बुरी, ५. मोरां = पीठ, ६. सीक्खर = शिखर-चोटी



( १२ )

कहे दास सगराम करमगति जाय न जाणी
परणी सोला सहस गबीजे राधा राणी
राधा राणी गबीजे सीता ने बनवास
सकल भजन रा ईश ने कियो डूम रो दास
कियो डूम रो दास नीच घर भरियो पाणी
कहे दास सगराम करमगति जाय न जाणी

( १३ )

कहे दास सगराम सुनो हो सज्जन भ्राता
दूजा कैतिक बात बड़ा दुःख दीठा माता
माता दुःख दीठा जिके सुण्या न जावे कान
बेटी राजा जनक की पति जिनके भगवान
पति जिसके भगवान आप रिधसिध की दाता
कहे दास सगराम सुनो हो सज्जन भ्राता

( १४ )

कहे दास सगराम सुनो सज्जन हितकारी
कर सुक्रत भज राम पनोती[१] आई भारी
भारी आई पनोती अब जूण[२] चोरासी लाख
धन धरियो रह जावसी तन होय जासी खाख
तन होय जासी खाख पछै तूं जाणे थारी
कहे दास सगराम सुनो सज्जन हितकारी

१. पनोती = आदेश, २. जूण = योनि

( १५ )

धनवंत धरम जु ना करे नरपति करे न न्याय
भजन करे नहीं भगत होय कीजे कौन उपाय
कीजे कौन उपाय सला इक सुनो हमारी
दो बहती रे पूर नदी आवे जद भारी
जाय गडिंदा खावता धरती टिके न पाय
धनवंत धरम जु ना करे नरपति करे न न्याय

( १६ )

सुन सज्जन सगराम कहे या बड़े संत की बात
भाल तिलक कंठी गळै लोटो गरणो[१] हाथ
लोटो गरणो हाथ सकल जीवां हितकारी
परधन धूळ समान बहन बेटी परनारी
रसना हालै रात दिन ज्यूं पीपल को पात
सुन सज्जन सगराम कहे या बड़े संत की बात

( १७ )

सुन सज्जन सगराम कहे भया स्याम सूं सेत
हाड नखाणा बारणै चेत सके तो चेत
चेत सके तो चेत हरिजन मारै हेला
कर आगां ने ठोर अठै कुण रेवण देला
बड़े ठिकाणे बास दे कर खांवंद सूं हेत
सुन सज्जन सगराम कहे भया स्याम सूं सेत

१. गरणो = गमछो



( १८ )

सुन सज्जन सगराम कहे तूं रामद्वारे जाय
मून पकड़ महाराज रो ध्यान धरो चितलाय
ध्यान धरो चितलाय जनां[१] रा दरसण कीजे
कथा श्रवणकर मींत सींत चरणामृत लीजे
कर जोड़ करुणा करो पद रज शीश चढ़ाय
सुन सज्जन सगराम कहै तूं रामद्वारे जाय

( १९ )

बायां ने सगराम कहे या राम भजन री ठौड़
रामद्वारे आयने मत करो निकम्मी झोड़[२]
मत करो निकम्मी झोड़ झोड़ में टोटो भारी
हीरां रो व्यापार छोड़ मत विणजो खारी
राम भजन रे कारणै आई घरां सूं दौड़
बायां ने सगराम कहे या राम भजन री ठौड़

( २० )

करणी नै करतूत रो कयां न आवे पार
सगरामदास कहे मैं सुणी या सारां में सार
या सारां में सार छाण ने पीजे पानी
गाढ़ो गरणो राख रहै जल में जीवानी
टोपोई ढोळै नहीं धरती बिना विचार
करणी नै करतूत रो कयां न आवे पार

१. जनां = हरिजन, २. झोड़ = वाद-विवाद

8

( २१ )

खट सासां की एक पल घड़ी एक पल साठ
साठ घड़ीका एक पहर व्है सगरामदास कहे आठ
सगरामदास कहे आठ सांस सौ बरसां तांई
भया अठत्तर क्रोड़ लाख चोतीस घटाई
राम भजन बिन खो दिया अकल बिहुणी टाट
खट[१] सासां की एक पल घड़ी एक पल साठ

( २२ )

असी बरस की आयु में सोवत गई चालीस
बारह बालापण गई बाकी आठ रु बीस
बाकी आठ रु बीस पछाड़ी बारह बूढ़ो
सोला में सगराम त्रिया ने भावे रूढ़ो
ताते भजिये रामकूं संत चरण धर शीश
अस्सी बरस की आयु में सोवत गई चालीस

( २३ )

सती नार सूरा जणे बड़भागण दातार
भगतिवान लक्ष्मी जणे या सारां में सार
या सारां में सार एक पापाँ री पूरी
लंपट और जुआर जणै गलकट[२] गढ़सूरी[३]
सगरामदास सांची कहै यामें फेर न सार
सती नार सूरा जणे बड़भागण दातार

१. खट = छै, २. गलकट = कसाई, ३. गढ़सूरी = सूरड़ी



( २४ )

मीरा जनमी मेड़ते परणाई चित्तौड़
राम भजन परताप सूं सकल सिस्ट सिरमौड़
सकल सिस्ट[१] सिरमौड़ जगत में सारे जाणी
आगे भई अनेक फेर बायां ने राणी
ज्यांरी तो सगराम कहे ठीक न कोई ठौर
मीरा जनमी मेड़ते परणाई चित्तौड़

( २५ )

हरिचन्द सत्त सगराम कहे करड़ो घणो नीराट
कठिन हियाको सांभळै छाती बजर कपाट[२]
छाती बजर कपाट भूप दु:ख दीठा भारी
धरड़ियो[३] आकाश लगी धर धूजण सारी
सूरज वंश उजाळियो महिपति मोटै पाट
हरिचन्द सत्त सगराम कहे करड़ो घणो नीराट

( २६ )

नर बानर सगराम कहे दोनूं एकण भाय
यो माया में मगन है वो खुशी गूलराँ खाय
वो खुशी गूलराँ खाय अभागे अनरथ कीन्हो
इण उजाड़ दियो बाग उणे हरीराम न लीन्हों
पूंछ नहीं या कसर है देखो दिल निरताय
नर बानर सगराम कहे दोनूं एकण भाय

१. सिस्ट = संसार, २. कपाट = किंवाड, ३. धरड़ियो = फट गया

( २७ )

राम भजन बिन नर पशु खोड़ीला[१] री खाण
बाके सींग रु पूंछ है ये बांडा मोडा जाण
ये बांडा मोडा जाण घणा रुळियार[२] कहावै
घणी सहेला मार धान खड भोळै खावै
सांच कही सगराम थे साहिबजी री आंण
राम भजन बिन नर पशु खोड़ीला री खाण

( २८ )

बाळूं या रसना परी कदे न सुमरे राम
सगरामदास किण काम रो मुख में आलो चाम
मुख में आलो चाम काढ़ नाखो ने दूरी
स्वाद बाद बकवाद कपट करवा ने सूरी
पकड़ी रहै न पापणी निकसी बकै निकाम
बाळूं या रसना परी कदे न सुमरे राम

( २९ )

कहे दास सगराम सुणो सज्जन बड़भागी
गुरु कीजे भजनीक कनक कामण रो त्यागी
त्यागी कन्नक कामणी जिके जनम मरण दे खोय
फिरे जगत में जाचता[३] वासूं भलो न होय
वासूं भलो न होय लगन माया सूं लागी
कहे दास सगराम सुणों सज्जन बड़ भागी

१. खोड़ीला = कुटिल, २. रुळियार = आचरणहीन, ३. जाचता = भीख मांगता



( ३० )

सुण साहजी सगराम कहे है वो को वोही सेर
लेतां देतां पार को क्यूं कर कीयो फेर
क्यूं कर कियो फेर कसर राखी नहीं कांई
तोबा[१] बार हजार इसी तूं करै कमाई
साहिब लेखो बूझसी जद ऊंधो देसी टेर[२]
सुण साहजी सगराम कहे है वो को वोही सेर

( ३१ )

सुण हाकम सगराम कहे तू अंधो मति हो यार
औरां के दोय अंखियां थारै चाहिजे च्यार
थारे चाहिजे च्यार दोय देखण ने बारै
दोय हिया रे मांहि जिका सूं न्याय निहारे
जस अपजस रहसी अठै समय पाय दिन चार
सुण हाकम सगराम कहे तूं अंधो मति हो यार

( ३२ )

साहिब के चौथे बरण छोटो बेटो जाण
हाथ लगे वै काम रै तो सारा करै बखाण
तो सारा करै बखाण पिता ने लागै प्यारो
मोटो करै न काम कूट ने कर दे न्यारो
ताते छोटा होय रहो मोटे पणा में हांण
साहिब कै चोथो बरण छोटो बेटो जांण

१. तोबा = धिक्कार, २. टेर = लटकाना

10

( ३३ )

बेगम गावै गालियां कर कर मन में कोड
बूढ़ी हुई बेसरमणी अब तो ममता छोड
अब तो ममता छोड़ घणी कूदी अरु नाची
कहै दास सगराम हमें तो लैनी पाछी
मरणो आयो शीश पर जम कूटे ला भोड[१]
बेगम गावै गालियां कर कर मन में कोड

( ३४ )

रोवण ने राजी घणी रांडोल्यां के साथ
के गीतां कै गालियां कै घर घर की बात
कै घर घर की बात जमारो इण विद जासी
सांई रे दरबार आपणा कीया पासी
सगराम कहे इणीरीत सूं कदे नहीं कुशलात
रोवण ने राजी घणी, रांडोल्यां के साथ

( ३५ )

कहे दास सगराम घणो बाजे है जाडो
आसण ओलै करो गुदड़ो ओढो गाडो
गाडो ओढो गुदड़ो लाग जायला ठाड[२]
खोटी होस्यो भजन सूं इणरो योही लाड
इणरो यो ही लाड पड़ेला भारी खाडो
कहे दास सगराम घणो बाजै है जाडो

१. भोड = सिर, २. ठाड = ठण्ड



( ३६ )

कहे दास सगराम धणी सुण रे माया रा
कर सुकृत भज राम भला दिन आया थारा
आया थारा दिन भला चूक मति या बार
धन धरिया रह जावसी तन होय जासी छार[१]
तन होय जासी छार धोय कर बहती धारा
कहे दास सगराम धणी सुण रे माया रा

( ३७ )

कहे दास सगराम सुणो धन री धणियाणी
कर सुकृत भज राम धोय कर बहते पाणी
बहते पाणी धोय कर कृपा करी महाराज
कारज करले जीव को कियो जाए तो आज
कियो जाय तो आज काल री जाय न जाणी
कहे दास सगराम सुणो धन री धणियाणी

( ३८ )

कहे दास सगराम सुणो माया मद माता
क्यूं देख देख होय खुशी ढेढ़णी ज्यूं पग राता[२]
ये राता कितना दिनां यूं तो मने बताय
सदा सुखी जो चाहिए गुण गोविन्द रा गाय
गुण गोविन्द रा गाय मिनख तन दीनों दाता
कहे दास सगराम सुणो माया मद माता

१. छार = राख, २. राता = लाल

( ३९ )

कहे दास सगराम सांच सांई ने भावे
देखो दिल निरताय[१] जाट तेजा ने गावे
गावे तेजा जाट ने दियो देवता थाप
पूजे सिरजनहार ने तो गुन्हा करे सब माफ
गुन्हा करे सब माफ बास अमरापुर पावे
कहे दास सगराम सांच सांई ने भावे

( ४० )

कही सुणी साखी घणी आठ पहर दिन रात
बिणज मोकळो[२] ही कियो नफो न लगो हाथ
नफो न लागो हाथ बीत गई ऊपर सारी
भज्यो न सिरजणहार करी थे भोलप भारी
ज्ञान बिना गाफिल[३] रहो किण आगे कहूँ बात
कही सुणी साखी घणी आठ पहर दिन रात

( ४१ )

बड़ो मिनख बाजे थनैं क्यूं ही कयो ना जाय
कियो जापता वास्ते तूं खोस खोस नै खाय
खोस खोस ने खाय जवाब देणो है मरनै
आयो है किण काम जायलो कांई करनै
धरमराज सूं है धको[४] बीतेली किण भाय
बड़ो मिनख बाजे थनैं क्यूं ही कयो न जाय

१. निरताय = नीतिपरायण, २. मोकळो = प्रचुर, ३. गाफिल = अचेत, ४. धको = सामना



( ४२ )

असल फकीरां की सुणो सगरामदास कहे बात
ओढण फाटो ग़ूदड़ो, धरे ध्यान दिन रात
धरे ध्यान दिन रात जठै कोई जाणे नाहीं
टुकड़ा पावे मांग गांव गेला ज्यूं जाही
दूर दूर दुनियां करे खांडी हांडी हाथ
असल फकीरां की सुणो सगरामदास कहे बात

( ४३ )

बड़ा साध जांकी सुणो सगरामदास कहे बात
राम गरीबनिवाज को धरे ध्यान दिन रात
धरै ध्यान दिन रात सकल जींवा हितकारी
कंचन खाक समान पुरुष सम जाणे नारी
लेस्यां वांरा वारणा कर कर लांबा हाथ
बड़ा साध जांकी सुणों सगरामदास कहे बात

( ४४ )

साध बैर बांधे नहीं सब जीवां हितकार
यां री तो जरणी[१] जबर बोवै[२] काली धार
बोवै काली धार जनां सूं जोर न कीजै
बन आवै तो टहल[३] नहीं तो अळगा[४] रहिजे
यांरे है सगराम कहे पूठे सबळी बार
साध बैर बांधे नहीं सब जीवां हितकार

१. जरणी = साधना, २. बोवै = डुबाना, ३, टहल = सेवा, ४. अळगा = दूर

( ४५ )

भोले ही कीजे मती मन तन रो विश्वास
पाव घड़ी में निकलसी नहीं उबरेला स्वास
नहीं उबरेला स्वास भरोसे इण रो काचो
कहै दास सगराम बळै के बळै न पाछो
रामराम कहे रात दिन जब लग घट में श्वास
भोले ही कीजे मती मन तन रो विश्वास

( ४६ )

सहज बात में होय भलो भोले ही मत जांण
रामराम कहै रात दिन कर काया कुरबाण
कर काया कुरबाण सुणो सज्जन हितकारी
कींकर किया जाय काम ये दोनूं भारी
रामदया सतगुरु दया अरु परालब्ध के पांण
सहज बात में होय भलो भोले ही मत जांण

( ४७ )

जगत सरब में जस लियो भज्यो न सिरजणहार
हो सूरो सगराम कहे मुवो गधारी बार
मुवो गधारी बार कबीलो[१] सब पछतायो
लेता खांवन्द खबर धणी के अरथ न आयो
ए कांई देसी बापड़ा धोबी और कुम्हार
जगत सरब में जस लियो भज्यो न सिरजणहार

१. कबीलो = परिवार



( ४८ )

कह कह थाको[१] थने हाय मन हाय कुपातर
भजन कोय नहीं करै भगत हुयो किण खातर
किण खातर हुयो भगत यूं तो मने बताय
पंगों पड़े है गृहस्थी तूं माल मुलक रा खाय
तूं माल मुलक रा खाय मुवो आछो इण नातर
कह कह थाको थने हाय मन हाय कुपातर

( ४९ )

कहे दास सगराम अकल थां में ही भारी
पण भज्यो न सिरजनहार पड़ी पाणी में सारी
पाणीं में सारी पड़ी लारे रही न एक
ऊणे कूणे रह गई है व्है तो कांईक देख
व्है तो कांईक देख फेरदी उपर बुहारी
कहे दास सगराम अकल थां में ही भारी

( ५० )

कहे दास सगराम सुणो सारा ही लोकां
मिनखा तन महाराज दियो है कितरा थोकां
कितरा थोकां सूं दियो यूं तो करो विचार
लख चौरासी भुगततां बीता है जुग चार
बीता है जुग चार भजनरी दो नी सोकां[२]
कहे दास सगराम सुणो सारा ही लोकां

१. थाको = हार गया, २. सोकां = सोकरड़ा (निरन्तर माला जाप)

13

( ५१ )

या तो आगे ही घणी, सगरामदास कहे लाय
बलती में पूलो बलै सरगुण सबद सुणाय
सरगुण सबद सुणाय सुणो सज्जन हितकारी
तूं जाणे है नफो पड़े है टोटो भारी
भजन कियो जावै नहीं तो सरगुण पद संभलाय
या तो आगे ही घणी सगराम दास कहे लाय

( ५२ )

कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी
अवतारां रा चरित सुण्या सूं लागे न कारी
ए औतार घणा हुआ करणो हो तो काज
सुमरो सिरजनहार ने पैदास कियां री लाज
पैदास कियां री लाज रची जिन रचना सारी
कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी

( ५३ )

कहे दास सगराम हाथ में हीरा आया
मिनख जनम रा मोल घाल गोफन में बाया
बाय दिया बेसूर[१] जब लारे रयोज एक
पारख पड़ियो रोइयो गोडां माथो टेक
गोडां माथो टेक इसा मैं घणाँ गमाया
कहे दास सगराम हाथ में हीरा आया

१. बेसूर = अविवेकी



( ५४ )

मिनखा तन हरि भजनरो सगरामदास कहे साज
राम राम कहै रात दिन तो चावै जेड़ो काज
तो चावै जेड़ो काज मुकति मांगे तो त्यारी
दे मोटो महाराज रची जिन रचना सारी
बलिहारी इण नाम री एडो सारे काज
मिनखां तन हरि भजन रो सगरामदास कहे साज

( ५५ )

कहे दास सगराम इसी थां मौजां माणी
करण[१] कहूँ के भोज[२] थने लाखो फूलाणी
लाखा फूलाणी[३] बिचे थारी भारी बात
वे अधिकारी सगराम तूं धरे ध्यान दिनरात
तूं धरे ध्यान दिन रात अभय पद पासी प्राणी
कहे दास सगराम इसी थां मौजां मांणी

( ५६ )

धरम करे नहीं धन छतां भजै न सिरजनहार
ज्यांने तो सगराम कहे बार बार धिक्कार
बार बार धिक्कार रांड गेली रा जाया
बळजासी या देह धरी रह जासी माया
कद आसी पाछो भलै यो अवसर या बार
धरम करे नहीं धन छतां भजै न सिरजनहार

१. करण = दानवीर कर्ण, २. भोज = राजा भोज, ३. लाखो फूलाणी = महादानी लाखा फूलाणी

( ५७ )

कहे दास सगराम समैं मिनखा तन थारी
बड़ा भाग रा धणी जिकां ने लागै प्यारी
प्यारी लागे जिकां ने भजन करे दिन रात
राम गरीबनिवाज रो और न दूजी बात
और न दूजी बात अभैपद[१] रा अधिकारी
कहे दास सगराम समैं मिनखा तन थारी

( ५८ )

कहे दास सगराम मूढ मिनखा तन पायो
भज्यो न सिरजणहार कमायो सोयो खायो
खायो ने सोयो पशू कियो विषय सूं प्यार
आयो चौरासी भुगतने फिर जावण ने त्यार
फिर जावण ने त्यार रांड गेली रो जायो
कहे दास सगराम मूढ मिनखा तन पायो

( ५९ )

कहे दास सगराम सुणो सब ही नर नारी
यो सुख दिन कितराक आगली मजल करारी
मजल करारी आगली भजन बिना जग चार
लख चौरासी जूण में दुख को वार न पार
दुख को वार न पार भुगततां होयला भारी
कहे दास सगराम सुणो सब ही नरनारी

१. अभैपद = परमपद



( ६० )

तन रो सुख सगराम कहे गवर[१] तणों सिंणगार
दिन दस लाड लडाय के बोवे ऊँडी धार
बोवे ऊँडी धार मार जमद्वारे खावे
राम भजन परताप बास अमरापुर पावै
बड़ा भाग ज्यांरा जिकै ऐसो करे विचार
तनरो सुख सगराम कहे गवर तणों सिंणगार

( ६१ )

कहे दास सगराम बड़ा थां बड़ी विचारी
पर धन धूल समान बहन बेटी परनारी
परनारी बेटी गिणो सब जीवां हितकार
न्याय करो नेकी लियां सुमरो सिरजणहार
सुमरो सिरजणहार मुकति का थे अधिकारी
कहे दास सगराम बड़ा थां बड़ी विचारी

( ६२ )

कहे दास सगराम गरीबी में गुण भारी
राम गरीबनिवाज जहाँ[२] जानत है सारी
जाणे है सारी जहाँ पण राखी किण सूं जाय
बेरणियां आडी फिरै मान बड़ाई खाय
मान बड़ाई खाय करे कुण यांने न्यारी
कहे दास सगराम गरीबी में गुण भारी

१. गवर = गणगौर, २. जहाँ = संसार

( ६३ )

कहे दास सगराम गृहस्थी सुण रे भाई
भलो करे है भजन फते घर बैठां पाई
घर बैठां पाई फते[१] करी कमाई आय
दुरबल री देखे दया सत संगति में जाय
सत संगति में जाय करी थां भलमनसाई
कहे दास सगराम गृहस्थी सुण रे भाई

( ६४ )

कहे दास सगराम मिनख ए देखो मोटा
पड़सी नरक अघोर जमां रा खासी सोटा
सोटा खासी जमां रा साहिब रे दरबार
जीव हते परधन मुसे तकै पराई नार
तकै पराई नार करे है करम जु खोटा
कहे दास सगराम मिनख ए देखो मोटा

( ६५ )

कहे दास सगराम साध रे परवा कांई
छाजन भोजन नीर घणो हरि इच्छा मांही
यो हरि इच्छा में घणो और न दूजी बात
राम राम कह रात दिन जनम सफल होय जात
जनम सफल होय जात मिले सुख सागर मांई
कहे दास सगराम साध रे परवा कांई

१. फते = विजय





( ६६ )

सुख देखे ज्यां पुन कियो दुख देखे ज्यां पाप
भुगतै है अपनो कियो सगरामदास कहे आप
सगरामदास कहे आप कुजस जस किणने भाई
फेर करे है जिसा भले आगे भरपाई
दाता रे दरबार में होय न्याय इनसाफ
सुख देखे ज्यां पुन किया दुख देखे ज्यां पाप

( ६७ )

कहे दास सगराम अवध आई डोकरड़ा
जेज[१] नहीं है हमें भजन रा दे सोकरड़ा
दे सोकरड़ा भजन रा आठ पहर दिन रात
खांवन्द निमत लगाय ले है कुछ थारे हाथ
है कुछ थारे हाथ रया दिन बाकी थोड़ा
कहे दास सगराम अवध आई डोकरड़ा

( ६८ )

कहे दास सगराम रया दिन बाकी थोड़ा
कर सुकृत भज राम दरगड़े घालो घोड़ा
घोड़ा घालो दरगड़े जद पूगोला ठेट
बिचलै बासै रह गया तो पड़सो किणरे पेट
पड़सो किणरे पेट पड़ेला भारी फोड़ा[२]
कहे दास सगराम रया दिन बाकी थोड़ा

१. जेज = देर, २. फोड़ा = कष्ट

16

( ६९ )

सगरामा स्वांगी करे सतपुरुषां री होड़
वे हंसा महराण[१] का थे डूंगर का टोड[२]
थे डूंगर का टोड मैल माया गटकावो
वे चुगै नाम मोताळ[३] दान सूं नांही दावो
होड करो हूस्यां मरो दो कनक कामनी छोड़
सगरामा स्वांगी करे सतपुरुषा री होड़

( ७० )

कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी
प्यारा लागे घणां म्हाने तो नाम लिहारी
नाम लिहारी ऊपरें हूँ बलि बारम्बार
भावै जैड़ी जात होय पण कारण नहीं लिगार[४]
कारण नहीं लिगार पुरुष भल होवो नारी
कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी

( ७१ )

धन वे जन संसार में ज्यां दिया सकल सुख छोड़
धरे ध्यान महाराज रो कर कर मन में कोड़
कर कर मन में कोड़ जाण या बड़ी कमाई
कै नारायण मांहि नहीं तो नर तन पाई
ऐसी जागां जनमसी जहाँ करे न कोई होड़
धन वे जनसंसार में ज्यां दिया सकल सुख छोड़

१. महराण = सागर, २. टोड = कौआ, ३. मोताळ = मोती, ४. लिगार = लेशमात्र



( ७२ )

कहे दास सगराम हमें तूं हूवो पुगतो
किया मोकळा काम राख खांवंद रो नुगतो[१]
नुगतो राख दयाल रो घणा किया है पाप
राम राम कह रात दिन गुन्हा[२] करे सब माफ
गुन्हा करे सब माफ जीव ने चावे सुखतो
कहे दास सगराम हमें तूं हूवो पुगतो

( ७३ )

कहे दास सगराम गजब मति कर रे गेला
खाय पराया माल बळद होय होय ने देला
होय होय ने देला बळद घणी सहेला मार
टूटै कांधे खांचसी भूखां मरतो भार
भूखां मरतो भार थने हूँ कहदूं पहलां
कहे दास सगराम गजब मति कर रे गेला

( ७४ )

भेष भरोसे रह मती सुन रे मनवा मोर
वो कदेही नहीं टले सगरामदास कहे चोर
सगरामदास कहे चोर बांध लेजासी पोटां
पहली कहूँ थनै जीभ फेरेलो होटां
रामराम कह रात दिन जम रो लगे न जोर
भेष भरोसे रह मती सुनरे मनवा मोर

१. नुगतो = आश्रम, २. गुन्हा = अपराध

( ७५ )

संसारी रा टूकड़ा नव नव आंगुल दांत
सीरा लाडू लापसी खावे कर कर खांत
खावै कर कर खांत जिकण रो कांई केला
करो भजन दिनरात धणी आपइ भर देला
यों तो म्हासूं व्है नहीं तो जम काढैला आंत
संसारी रा टूकड़ा नव नव आंगुल दांत

( ७६ )

नर तन दीनो रामजी सतगुरु दीनो ज्ञान
ए घोड़ा हांको हमें ओ आयो मैदान
ओ आयो मैदान आकरी बाग सजावो
धरो धणी रो ध्यान मिनख तन रो लो लावो[१]
कुण करसी सगराम कहे आंख्या आडा कान
नर तन दीनो रामजी सतगुरु दीनो ज्ञान

( ७७ )

कहे दास सगराम इसा जन जीवन मुकता
दयावंत दिल पाक[२] सकल जीवां सु लघुता
लघुताई राखे घणी भजन करे दिन रात
लेस्यां बांरा बारणा कर कर लम्बा हाथ
कर कर लम्बा हाथ घणा वे हुइज्यो पुगता
कहे दास सगराम इसा जन जीवन मुकता

१. लावो = लाभ, २. पाक = पवित्र



( ७८ )

लागो है हरि नाम सूं जां पुरुषां रो प्यार
अनजल लेतां देर होय कै नींद घड़ी दो चार
कै नींद घड़ी दो चार जिकी भी लागै खारी
तनरो भाड़ो जाण दिया बिन लगै न कारी
यूं जाणे आसी कदै यो ओसर या बार
लागो है हरि नाम सूं जां पुरुषां रो प्यार

( ७९ )

कहे दास सगराम डोकरा भली विचारी
पूरबलो आंकूर उदै अब भयो है भारी
भारी उदै यो भयो भजलो सिरजणहार
खांवन्द बूठो पाछलो करसी जै जै कार
करसी जै जै कार नाम की नेपै[१] भारी
कहे दास सगराम डोकरा भली विचारी

( ८० )

क्यूं करा मोत रो सोच किया सतगुरु अनुरागी
कहै दास सगराम मुवां के मौजां लागी
मौजां लागी मुवां कै रहस्यां खावन्द द्वार
कसर रही होयतो भले मिनख जमारो त्यार
मिनख जमारो त्यार बड़ा होस्यां बैरागी
क्यों करां मोत रो सोच किया सतगुरु अनुरागी

१. नेपै = उपज

( ८१ )

कहे दास सगराम भजन कर रे मन मोडा
बातां में बेकूफ काढसी कांई डोडा
डोडा कांई काढसी यूं तो मनै बताय
पड़सी पापी नरक में मार जमां री खाय
मार जमां री खाय कूटसी थारा गोडा
कहे दास सगराम भजन कर रे मन मोडा

( ८२ )

कहे दास सगराम हमें तो चेतो बीरा
भूखां मरता मरो कमर में लटके लीरा
लीरा लटके कमर में चेत हमें तो चेत
आधो परधो उबरे चिड़ियां खायो खेत
चिड़ियां खायो खेत गाय गुण साहिब जी रा
कहे दास सगराम हमें तो चेतो बीरा

( ८३ )

दिनरा बातां बस कियो रात पड्यां सूं नींद
राम भजन कैसे करे दोय बहू रो बींद
दोय बहूरो बींद पकड़ बैठो हैं गाडी
धणी बूझसी ज्वाब[१] जदे ए फिरे न आडी
सुण भाई सगराम कहे (थारी) अकल गई आकींद
दिनरां बातां बस कियो रात पड्यां सूं नींद

१. ज्वाब = जवाब



18

( ८४ )

नींद पईसा पांचरी लाख मोहर की रात
भजन बिना खोई सखी पति सूं करी न बात
पति सूं करी न बात कौन गति व्हैला थारी
देसी खाविंद दुहाग भुगतणां व्हैला भारी
कद पाछो आसी भले मिनख जमारो हाथ
नींद पईसा पांचरी लाख मोहर री रात

( ८५ )

कहे दास सगराम जिते साजी है जिंदड़ी[१]
करो भजन दिनरात काच री है या सिंदड़ी[२]
सिंदड़ी है या काच री बिनसत लगे न बार
लीज्यो लियो जाय तो लावो है दिन चार
लावो है दिन चार छूट जासी या सिंदड़ी
कहे दास सगराम जिते साजी है जिंदड़ी

( ८६ )

माया जोबन राजमद बोवे काली धार
जिण रे ए तीनों हुवै कोई न पड़ियो पार
कोई न पड़ियो पार जिकण रो कांई कीजे
राम भजन सतसंग दया दुरबल री लीजे
न्याव करे नेकी लियां सुमरे सिरजणहार
माया जोबन राजमद बोवे काली धार

१. जिंदड़ी = जीवन, २. सिंदड़ी = काया

जमारो = योनी

( ८७ )

तीरथ धरती ऊपरे है गुणचास करोड़
ब्रह्मा रा कीया भले गिण्या न आवे ओड़
गिण्या न आवे ओड़ गिने जो न्यारा न्यारा
कहे दास सगराम कराया सतगुरु सारा
राम भजन परताप सूं बैठां एकण ठोड़
तीरथ धरती ऊपरे हैं गुणचास किरोड़

( ८८ )

कहे दास सगराम करे क्यूं करुणा थोथी
खावंद होसी खुशी भजन री कियां भरोती
कियां भरोती भजन री राम राम कहै राम
दियां छूठवो होवसी बड़े राजरा दाम
बड़े राजरा दाम कौल[१] थे कीयो मोती[२]
कहे दास सगराम करे क्यूं करुणा थोथी

( ८९ )

कहे दास सगराम भजन री भुरकी भारी
न्हांखे सन्त सुजाण जिकां ऊपर मैं वारी
मैं वारी वां ऊपरे भरम करम दे मेट
चौरासी रा जीव ने मुकति मेल दे ठेट
मुकति मेल दे ठेट जिकां री मैं बलिहारी
कहे दास सगराम भजन री भुरकी भारी

१. कौल = वचन, २. मोती = एक पटु शिष्य का नाम





( ९० )

सुणरे मन सगराम कहे इती रीस मत राख
मिनखा जनम बिगाड़सी हतियारण हकनाक[१]
हतियारण हकनाक कयो जो माने म्हारो
कर चरणां सूं प्रीत भलो होय जासी थारो
सोभा होवसी जगत में दिल होय जासी पाक
सुणरे मन सगराम कहे इती रीस मत राख

( ९१ )

क्यूं मूंजी मतिहीन भरे माया सूं मटको
पच पच ने तू पचे संग नहीं चाले बटको[२]
बटको संग चाले नहीं अकल बिहूणा ढोर
राम भजन सुकृत बिना पड़सी नरक अघोर
पड़सी नरक अघोर काढ़सी कांई गटको
क्यूं मूंजी मतिहीन भरे माया सूं मटको

( ९२ )

जीवां रो जोहर करे परभाते ही जाय
कांई है इण में नफो यूं तो म्हने बताय
यूं तो म्हने बताय पड़े है भारी टोटो
गाढ़ो गरणो राख बेवड़ो चोखो लोटो
चतुराई सूं छाण ने सगराम दास कहे न्हाय
जीवां रो जोहर करे परभाते ही जाय

१. हकनाक = व्यर्थ, २. बटको = टुकड़ा

( १३ )

अणगल पानी में पड़े परभाते ही जाय
मारे जीव असंखिया पछै रोटियां खाय
पछै रोटियां खाय कुबद या किणी सिखाई
नव लख जीवां बैर पड़े है सुण रे भाई
बाबो लेखो बूझसी तब भुगतेला किण भाय
अणगल पाणी में पड़े परभाते ही जाय

( १४ )

बाकरियो बो बो करे करे हिरणियों डाड
भेडां भोंभाड़ा करे नहीं किणी रे गाड
नहीं किणी रे गाड बड़ा पापी हतियारा
कीकर बैवै हाथ गरीबां ऊपर थारा
बुझेलो बाबो थने दे माथे में फाड़
बाकरियो बो बो करे करे हिरणियों डाड

( १५ )

कहे शासतर सन्त अधम भारी सूं भारी
प्राणघात करि भखैं तके परधन परनारी
परधन परनारी तके बजर[१] पाप ए जाण
पड़सी नरक अघोर में जब लग शशि अरु भांण[२]
जबलग शशि अरु भांण सुनो सब ही नर नारी
कहे शासतर सन्त अधम भारी सूं भारी

१. बजर = भयंकर, २. भांण = सूर्य





# रामनाम-महिमा

( १६ )

कहे दास सगराम राम रस करलो गटका
मत चूको या समै चार दिन का है चटका
ये चटका चूक्यां पछे मिले न दूजी बार
लख चौरासी जूण में दुख को वार न पार
दु:ख को वार न पार घणा मारोला भटका
कहे दास सगराम राम रस का लो गटका

( १७ )

कहे दास सगराम मार मत रे मन भटका
मिनख कियो महाराज रामरस का ले गटका
गटका ले नी रात दिन ज्ञान गोखड़े[१] बैठ
इण जेड़ो दूजो नहीं सगरामदास कहे पैठ
सगरामदास कहे पैठ आय दिन दीयां चटका
कहे दास सगराम मार मत रे मन भटका

( १८ )

कहे दास सगराम मार मति भटका बारे
मिनख कियो महाराज मुगति मूंडा में थारे
मूंडा में थारे मुगति राम राम कह राम
जोग जिग[२] तीरथ बरत इण में चारूं धाम
इण में चारूं धाम फौज जूं राजा लारे
कहे दास सगराम मार मति भटका बारे

१. गोखड़े = गवाक्ष, २. जिग = यज्ञ

21

( ९९ )

मिनख मिनख सब सारिखा जाणे लोग गंवार
पापी पशू समान है भजनि पुरुष अवतार
भजनि पुरुष अवतार जके तो मुकती पासी
पापी पड़सी नरक मार जमद्वारे खासी
इत्तो फरक सगराम कहे सुण लीजो नरनार
मिनख-मिनख सब सारिखा जाणे लोग गंवार

( १०० )

काया कूवा में घणों नाम नीर दहचाल
निस दिन बहे रसना रटत भोगे दोनूं काल
तो भोगे दोनू काल कमाई आडी आवै
करसा के होय धान मुकति रजनीक[१] सिधावै
सगरामदास इण शब्द रो लीजो अरथ संभाल
काया कूवा में घणों नाम नीर दहचाल

( १०१ )

कहे दास सगराम धणी चाहीजै पूठी
सिर समरथ के हाथ बांदरा लंका लूटी
लंका लूटी बांदरा सबल श्याम[२] के पाण
अरजुन तो वे ही हुता अरु वेका वेही बाण
वेका वेही बाण गोपियां काबा[३] लूटी
कहे दास सगराम धणी चाहीजे पूठी

१. रजनीक = निकट, २. श्याम = स्वामी, ३. काबा = बाटमार



( १०२ )

आप निमित तो सहस मण राम निमित कण एक
पांडवां का जिग में भई सगरामदास कहे देख
सगरामदास कहे देख जगत सगलो हि जिमायो
राम भजन के पाण शंख भजनीक बजायो
राजा परजा देवता लज्जित भयो सब भेख[१]
आप निमित तो सहस मण राम निमित कण एक

( १०३ )

कहे दास सगराम सुनो हो सज्जन मीता
राम रटो दिन रात कह्यो लछमण ने सीता
लछमण ने सीता कह्यो अरजन ने भगवान
पारवती ने शिव कह्यो, धरो राम रो ध्यान
धरो राम रो ध्यान जाय है निशदिन बीता
कहे दास सगराम सुणो हो सज्जन मीता

( १०४ )

कहे दास सगराम सुणो हो सज्जन मिंता
थारी बात सजान थने क्यूं व्यापै चिंता
क्यूं व्यापे चिंता थने सुख सागर सूं सीर
राम भजन बिन दिन गया वे सालै[२] हैं बीर
वे सालै हैं बीर आप जावै जब चिंता
कहे दास सगराम सुणो हो सज्जन मिंता

१. भेख = साधु समाज, २. सालै = चुभना

22

( १०५ )

कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी
राम भजन परताप घणो भारी सूं भारी
भारी सूं भारी घणो जिका कहूँ सुण बात
झूठा बोर आरोगिया शिबरी रा रघुनाथ
शिबरी रा रघुनाथ मही जानत है सारी
कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी

( १०६ )

सुणो मिंत सगराम कहे, भजन कौन विधि होय
बैरणियां म्हारे बड़ी लारे लागी दोय
लारे लागी दोय, इसी कुण कुण रे भाई
दिन रा बातां बैन, रात रा निंदरा बाई
लाग लाग यां रे कहे दियो टापरो[1] खोय
सुणो मिंत सगराम कहे भजन कौन विधि होय

( १०७ )

सुणो मिंत सगराम कहे माला मोटी बात
बड़ा भाग ज्यांरा जिका फेरे दिन अरु रात
फेरे दिन अरु रात कमाई लाग्या भारी
के नारायण मांहि नहीं तो नरतन न्यारी
इसे ठिकाणे जनमसी जठे घणा जोड़सी हात
सुणो मिंत सगराम कहे माला मोटी बात

१. टापरो = घर



( १०८ )

सुणो मिंत सगराम कहे (थारे) भलो करण री पीक[1]
तो राम नाम री रात दिन देले झीका झींक
देले झीका झींक कयो मानै तो म्हारो
बिन खरची बिन खेल, भलो होय जावे थारो
सतगुरु फरमाई म्हने जिकी थनै दूं सीख
सुणो मिंत सगराम होय भलो करण री पीक

( १०९ )

सुणो मिंत सगराम कहे, मिनख जनम रा सांस
भरिया जावै भजन सूं तो दे अमरापुर बास
तो दे अमरापुर बास जिकै जावै है रीता
लख चौरासी जूण भुगततां आसी चिंता
इसा इसा दुःख देखसी सो सुण्या न आवै भास
सुणो मिंत सगराम कहे मिनख जनम रा सांस

( ११० )

सुणो मिंत बूझे मने ए राम नाम रा लाभ
इणरी तो पड़सी खबर होसी जदे हिसाब
होसी जदे हिसाब थनै पहला कहुँ कांई
देसी दीनानाथ बास अमरापुर मांही
जब लग तन में सांस है करले भजन सताभ[2]
सुणो मिंत बूझे मने ए राम नाम रो लाभ

१. पीक = अभिलाषा, २. सताभ = शीघ्र

23

( १११ )

सुणो मिंत सगराम कहे सकर नींद[१] मति सोय
सहस गुणों फल भजन रो इसी बखत दे खोय
इसी बखत दे खोय, पड़े है टोटो[२] भारी
पहला कह दूं थने पछे तू जाणे थारी
राम राम कहे प्रीति सूं सुरत शब्द में पोय
सुणो मिंत सगराम कहे सकर नींद मति सोय

( ११२ )

पहर पाछली रात रा भजन करो चित लाय
प्रात समै सगराम कहे सहस गुणों होय जाय
सहस गुणों होय जाय सीख सतगुरु फरमाई
कहे शास्त्र अरु सन्त तिका में कसर न कांई
सतपुरुषां रा वचन है संत कहे समझाय
पहर पाछली रात रा भजन करो चित्त लाय

( ११३ )

बालमीकजी री करी रामायण सौ कोड़
बांटी तीनूं लोक में शिवजी कीन्ही जोड़
शिवजी कीन्ही जोड़ उभै[३] अक्खर उर लीना
बाकी अक्खर तीस ईस पांती कर दीना
जीव बिना किण कामरी सगरामदास कहे खोड़[४]
बालमीकजी री करी, रामायण सो कोड़

१. सकर नींद = सुबह की मीठी नींद,२. टोटो = हानि, ३. उभै = दोनों (रा और म) ४. खोड़ = काया



( ११४ )

अनजल रो संजम करै बड़ी तपस्या जाण
काया ने कसणां[१] घणी पांचों पकड़े प्राण
पांचू पकड़े प्राण सुमति हिरदा में जागे
आठूं पहर अखण्ड भजन सूं ताली लागे
सतगुरु का परताप सूं पावै पद निरमाण
अनजल री संजम करै बड़ी तपस्या जाण

( ११५ )

कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई
करता आया सदा जिकां सूं हुव है भाई
हुव है भाई जिकां सूं सुणो सकल ही लोय
आया चोरासी भुगतता बांसू क्यों कर होय
बांसू क्यों कर होय खपै है करण घणाई
कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई

( ११६ )

कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई
आढी फिरगी तीन करूं कीकर रे भाई
वाह भाई कुण कुण हुई निंदड़ी जिदड़ी बात
यां रो साधन साधतां बीते दिन अरु रात
बीते दिन अरु रात, अदल[२] तो आइक[३] आई
कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई

१. कसणां = तितिक्षा, २. अदल = सेवा, ३. आइक = यही

२५

( ११७ )

कहे दास सगराम भजन की करड़ी घाटी
आडा ऊभा पाप हाथ में लियां लाठी
लाठी लियां हाथ में पांव धरण दे नांहिं
आगो मेलूं पांवडौ तो दे गाबड़[१] के मांहिं
दे गाबड़ के मांहि कमाई कीन्ही माठी
कहे दास सगराम भजन की करड़ी घाटी

( ११८ )

कहे दास सगराम उनमनी[२] आवरी बाई
यूं तो मने बताय कांई सारू रीसाई
रीसाई किण बास्ते म्हारे थारी चाय
थां आयां होसी भलो मिनख जमारो जाय
मिनख जमारो जाय करूं किंकर जु कमाई
कहे दास सगराम उनमनी आवरी बाई

( ११९ )

भावे जितरी सुणों बात तो या की याही
गया राम गुण भूल जिके दोजख में जाही
दोजख में जासी जिके बह जासी भो[३] धार
भजन करे है रात दिन वे होय जासी पार
वे होय जासी पार बास अमरापुर मांही
भावे जितरी सुणों बात तो या की याही

१. गाबड़ = गर्दन, २. उनमनी = उन्मनावस्था, ३. भो = भव (संसार)



( १२० )

बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार
गज गति भयो राकार सूं पूगो पछे मकार
पूगो पछे मकार जाण गोली ने दागी
कहैं दास सगराम आवाजां पहली लागी
ऐसी साहि सिताब[१] सूं कीन्ही सिरजण हार
बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार

( १२१ )

कहे दास सगराम भाग धिन भाई थारो
भलो करे है भजन मंडे़ है दफ्तर सारो
दफ्तर में सारो मंडे़ भारी लेसी लाभ
भरदेसी खांवन्द थनै होसी जदे हिसाब
होसी जदे हिसाब दफे[२] दुःख दालिद सारो
कहे दास सगराम भाग धिन भाई थारो

( १२२ )

बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार
बिना खेद[३] खरची बिना करदे बेड़ो[४] पार
कर दे बेड़ो पार इसो साहिब है म्हारो
कहे दास सगराम सृष्टि रो सिरजनहारो
इण खांवन्द ने नहीं भजे (वाने) बार बार धिक्कार
बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार

१. सिताब = शीघ्र, २. दफे = मिटाना, ३. खेद = श्रम, ४. बेड़ो = नौका

25

( १२३ )

जाय पड़े नर नरक में मार जमां री खाय
जीभ हिलायां होवे भलो जिको न कियो जाय
जिको न कियो जाय इसो कांई है दोरो
धणी भोलायो काम जिको सारां में सोरो
किण खातिर खांवन्द करै सगरामदास सहाय
जाय पड़े नर नरक में मार जमां री खाय

( १२४ )

कारज रूपी बहुत है घणनामी[1] रा नाम
कारण रूपी एक है भजन करण नै राम
भजन करण नै राम एक यो रहसी भाई
कहै दास सगराम और सारा भर जाई
धरो ध्यान महाराज रो निसदिन आठूं जाम[2]
कारज रूपी बहुत है घणनामी रा नाम

( १२५ )

राम नाम सगराम कहे सिला अलूंणी जाण
बड़ा भाग ज्यांरा जिके चाहे संत सुजाण
चाहे संत सुजाण खबर सत गुरु सूं पाई
पड़सी इणरी जाण सलूंणी होय जद भाई
मिलसी मोटा श्याम सूं पावे पद निरवाण
रामनाम सगराम कहे सिला अलूंणी जाण

१. घणनामी = परमात्मा, २. जाम = पहर



( १२६ )

लाग जाय हरिनामसूं मिनख जमारे आय
सुणो मिंत सगराम कहे करम सबै मिट जाय
करम सबै मिट जाय बास अमरापुर पावे
सुखसागर ने छोड़ पछे पाछो कुण आवे
ब्रह्मा विष्णु महेश रे या ही आवे दाय
लाग जाय हरिनाम सूं मिनख जमारे आय

( १२७ )

राम नाम कलवृक्ष में सारा ही फल त्यार
आन धरम सगराम कहे ज्यूं बनी अठाराभार
ज्यूं बनी अठाराभार सुनो सज्जन हितकारी
जिसो सींचो पेड़ जिसो फल होय है त्यारी
पहला कह दूं हूँ थने भावे सोई विचार
राम नाम कलवृक्ष में सारा ही फल त्यार

( १२८ )

सहस नाम लेसी कदे अरजुन पडियां काम
बैरी आया ऊपरे एक बार कह राम
एक बार कह राम सहस नामां के जोड़े
गुप्त कयो मैं थने सुन र करजे मति चौड़े
म्हारे यो ही ध्यान है अन्तर आठों जाम
सहस नाम लेसी कदे अरजुन पड़ियां काम

❁ ❁ ❁